साँवले सपनों की याद

प्रश्न १- किस घटना ने सालिम अली के जीवन की दिशा को बदल दिया और उन्हें पक्षी प्रेमी बना दिया?

उत्तर १- सालिम अली सहृदय व्यक्ति थे। एक बार उनकी एयरगन से नीले रंग की गौरैया घायल होकर गिर गई। उनका भावुक मन अपने इस अपराध से शर्मसार हो गया और इसी अपराध भावना ने उनकी ज़िन्दगी बदल दी। उनका सम्पूर्ण जीवन पर्यावरण की रक्षा के प्रयास में व्यतीत हो गया। पक्षी जगत के विषय में नै-नै जानकारी एकत्रित करना तथा दुनिया को पर्यावरण सुरक्षा के लिए प्रेरित करना उनके जीवन का उद्देश्य बन गया। इस प्रकार घायल चिड़िया से घायल हुआ उनका मन 'पक्षी प्रेमी' बन गया।

प्रश्न २- सालिम अली ने पूर्व प्रधानमंत्री के सामने पर्यावरण से संबंधित किन संभावित खतरों का चित्र खींचा होगा कि जिससे उनकी आँखें नम हो गई थी?

उत्तर २- सालिम अली ने भूतपूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के समक्ष प्राणियों के प्राण तत्व की रक्षा का अनुरोध किया होगा। प्रकृति के इन प्राणियों की उड़ान को सीमित न करने का आग्रह किया होगा इनके कलरव से ही प्रकृति सुरमय बनती है, जीवन को ख़ुशी से जीने की व उन सभी दुख-दर्द को भूल जाने की आशा जगती है। इनके अभाव में न पेड़ों की पत्तियाँ अंकुरित हो पाएँगी और न ही फूल मुस्कुरा पाएँगे। शायद ऐसे ही शब्द-चित्र खींचकर सालिम अली ने प्रकृति प्रेमी चौधरी चरण सिंह को प्रभावित किया होगा। प्रकृति के प्रति सालिम अली का ऐसा प्रेम देखकर ही शायद चौधरी साहब की आँखें नाम हो गई होगी।

प्रश्न ३- लॉरेंस की पत्नी फ्रीडा ने ऐसा क्यों कहा होगा कि "मेरी छत पर बैठने वाली गौरेया लॉरेंस के बारे में ढेर सारी बातें जानती है?

उत्तर ३- लॉरेंस की पत्नी जानती थी कि लॉरेंस उनसे ज्यादा गौरेया से प्रेम करते थे। लॉरेंस प्रकृति प्रेमी थे। लॉरेंस के प्रकृति प्रेम को बताने का इस से सशक्त माध्यम कोई और नहीं

हो सकता था। लॉरेंस अपना अधिकतर समय गौरेया के साथ व्यतीत करते थे वह उनके सुख-दुख की साथी थी। वास्तविक तौर पर फ्रीडा यह कहना चाहती थी कि लॉरेंस का अधिकतर समय पक्षियों के साथ ही व्यतीत होता था। अपनी पत्नी से ज़्यादा वे पक्षियों को प्रेम करते थे और उन्ही के लिए उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।

प्रश्न४- आशय स्पष्ट कीजिए -

(क) वो लॉरेंस की तरह नैसर्गिक ज़िन्दगी का स्वरूप बन गए।

(क) सालिम अली सहज, सरल और स्वभाविकता से परिपूर्ण थे। दुसरे शब्दों में उनके स्वभाव आचार-विचार में कृत्रिमता नहीं थी। खुले आकाश की तरह उनका दिल और दिमाग कलुषित विचारों से दूर था। जिस तरह लॉरेंस ने अपनी पूरी ज़िन्दगी पक्षियों के कल्याण में लगा दी, ठीक उसी तरह सालिम अली ने भी यश की कामना से दूर अपनी सहृदयता और मानवता का परिचय देते हुए पक्षियों के कल्याण के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया। उनके इस समपर्ण में कहीं आडम्बर नहीं था।

(ख) कोई अपने जिस्म की हरारत और दिल की धड़कन देकर भी उसे लौटाना चाहे तो वह पक्षी अपने सपनों के गीत दोबारा कैसे गा सकेगा।

(ख) उपरोक्त पंक्ति का आशय यह है कि मृतक व्यक्ति लौटकर नहीं आसकता और न ही उसके दिल की धडकनों को वापिस लौटाया जा सकता है। हम चाहे भी तो पक्षी प्रेमी सालिम अली को जीवित नहीं कर सकते। कहने का भाव यह है कि बनावट व यश से दूर सालिम अली जैसे व्यक्तित्व लौटकर नहीं आसकते न ही उनके कल्याणकारी भाव प्रयत्नपूर्वक उत्पन्न किए जा सकते हैं। परन्तु हम उनके विचारों का अनुसरण अवश्य कर सकते हैं। लेखक का मानना है कि पक्षी जगत का कल्याण सालिम अली का सपना था। उनके अभाव में उनके सपनों को पूरा नहीं किया जा सकता परंतु एक कोशिश ज़रूर की जा सकती है।

(ग) सालिम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाय अथाह सागर बनकर उभरे थे।

(ग) उपरोक्त पंक्ति का आशय यह है कि सालिम अली को किसी भी सीमा में नहीं बाँधा जा सकता। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन पक्षी जगत कि नई-नई जानकारी खोजने में लगा दिया। उन्होंने केवल दिखावे के लिए नहीं अपितु दिल से पक्षियों का भला चाहा। पक्षी जगत कि नई-नई खोज करना, उनकी देखभाल करना, इस दिशा में लोगों को प्रेरित करना उनके जीवन का उद्देश्य बन गया। वह गुणों का सागर बन गए। स्वयं ही उनहोंने इस दिशा में अपने कार्य किए जो गहराई व ऊँचाई लिए हुए थे। प्रकृति के इन जीवों की रक्षा के लिए उनहोंने अपनी सीमित सोच को विस्तार दिया व पक्षियों की उन्मुक्त उड़ान को हर्ष का उल्लास दिया।

प्रश्न ५- इस पाठ के आधार पर लेखक की भाषा शैली की चार विशेषताएँ बताइए।

उत्तर ५- प्रस्तुत पाठ में लेखक जाबिर हुसैन की भाषा में प्रवाह नज़र आता है यथा :-

- उनहोंने चित्रात्मक भाषा का सुंदर प्रयोग किया है।
- तत्सम, तद्भव, उर्दू व अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग कर अथवा मिश्रित शब्दावली का प्रयोग कर विस्तार से अपने विषय को समझाया।
- वर्णात्मक शैली का प्रयोग किया है।
- उन्होंने सीधे-सरल वाक्यों का प्रयोग ना कर जटिल अथवा अलंकारिक भाषा का प्रयोग किया है।
- अलंकारों का सुंदर समन्वय देखने योग्य है।
- भावनाओं के अछूते समुद्र का स्पर्श करने का सामर्थ्य हमें इनकी भाषा में नज़र आता है।

प्रश्न ६- इस पाठ में लेखक ने सालिम अली के व्यक्तित्व का जो चित्र खींचा है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर६- सालिम अली पक्षी प्रेमी व घुमक्कड़ प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। पर्यावरण की सुरक्षा करना उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य था। वह भावुक थे तथा ज़िन्दगी के प्रति आशावादी

दृष्टिकोण रखते थे। वह प्रकृति के अंग-संग रहे व अपना सम्पूर्ण जीवन उसी को समर्पित कर दिया। उनके एकांतक्षणों के साथी पक्षी तथा प्रकृति थे जिनके संरक्षण के लिए उनहोंने अपना जीवन समर्पित कर दिया।

प्रश्न ७- 'सांवले सपनों की याद' शीर्षक कि सार्थकता पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर ७- 'सांवले सपनों की याद' एक रहस्यात्मक शीर्षक है।यह मनमोहक इच्छा का प्रतीक है। प्रकृति प्रेमी जाबिर हुसैन सालिम अली के प्रकृति प्रेम के प्रति नतमस्तक हैं। वह सालिम अली के सलोने सपनों की स्मृतियों को जगाकर पाठकों को अभिभूत कर देना चाहते हैं। उपरोक्त शीर्षक चाँद के समान शीतलता देने वाला है। इस शीर्षक के रहस्यवादी होने के कारण पाठकों में जिज्ञासा उत्पन्न होती है और यह जिज्ञासा उन्हें सालिम अली के सपनों को सहेजने के लिए प्ररित करती है।

प्रश्न ८- प्रस्तुत पाठ सालिम अली की पर्यावरण के प्रति चिंता को भी व्यक्त करता है। पर्यावरण को बचाने के लिए आप कैसे योगदान दे सकते हैं?
उत्तर ८- "अकेला चना भाद नहीं फोड़ सकता" इसका अर्थ यह है कि अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता।

"प्रकृति और मानव का चिरंतन सम्बन्ध है", पंचतत्व से निर्मित यह सुंदर कायातंत्र है। पर्यावरण वह है- 'जो मनुष्य अपने नेत्र खोलने पर चरों ओर प्रकृति का समूचा रूप देखता है। मानव तन प्रकृति के पाँच तत्वों से बना है। इन्हीं तत्वों के आपसी संतुलन, इनकी एक दुसरे की अनिवार्यता से बने वातावरण को हम पर्यावरण के रूप में जानते हैं। पर्यावरण की शुद्धता से ही वातावरण शुद्ध रह सकता है। आज सर्वत्र प्लास्टिक का चलन हो गया है जो पर्यावरण के लिए बहुत बड़ा ख़तरा है। इससे नदी-नाले तक अवरुद्ध हो जाते हैं। हम यह चेतना पैदा करेंगे कि प्लास्टिक का प्रयोग न किया जाए। केवल वाही प्लास्टिक काम में लाया जाए जो बायोडिग्रेडेबल हो या फिर जूट, कपड़े आदि का प्रयोग किया जाए। हम पर्यावरण की सुरक्षा अधिक से अधिक पेड़-पौधे लगाकर कर सकते हैं। बूंद-बूंद से घड़ा भरता है ठीक उसी प्रकार पर्यावरण को बचाने के लिए हमें एक जुट होकर कार्य करने चाहिए।

श्रीमती एस.धीर